अब भारत को जगना होगा

मां भारती के अमृतपुत्रो! आज आपकी मां दयनीय अवस्था में आर्तनाद कर रही है। इसके कितने ही पुत्र–पुत्रियां आज भी अंग्रेजियत के दास बनकर मां भारती का चीरहरण कर रहे हैं। मेरे अभागे आर्यावर्त्त! तेरे नागरिकों के हृदय व मस्तिष्क में अभी भी अंग्रेज बैठा आर्य वैदिक संस्कृति का क्रूर उपहास कर रहा है। यह काला अंग्रेज कभी फिल्मों, तो कभी कथित प्रबुद्धों के लेखों वा वक्तव्यों में बैठा इस मां वसुन्धरा के महानायकों को अपमानित कर रहा है। कभी कोई उन्मत्त कथित प्रबुद्ध वेद वा वैदिक साहित्य पर आक्रमण करता है। तो कोई अन्धविश्वासों के खण्डन की आड़ में महान् योगिराज महावैज्ञानिक भगवान् शिव का अपमान करने का दुःसाहस करता है। तो कोई महावेदवित् भगवान् ब्रह्मा के चरित्र का हनन करता है। कभी कोई दुष्ट बौद्धिक दास भगवती देवी उमा अथवा महासती भगवती सीता पर लांछन लगाने का पाप करता है। कोई महायोगेश्वर चक्रधारी विश्वजित् भगवान् श्रीकृष्ण वा वैदिक धर्म के प्रतिपालक भगवान् श्रीराम के इतिहास को ही नकारने की धूर्तता करता है। कोई इतिहास शोध के नाम पर देशभक्त शिरोमणि स्वाभिमान के प्रतीक महाराणा प्रताप के DNA पर प्रश्न खड़े करता है, तो आज एक धन का लोभी, राष्ट्र के प्रति गद्दारी करने वाला पागल भारतीय नारी, पतिव्रत धर्म की मूर्ति महारानी पद्मिनी को रसिका के रूप में चित्रित करने की उद्दण्डता कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मां भारती के घायल सीने को इसके ही पुत्र आस्तीन के सर्प बनकर डंसने का पाप, किन्हीं विदेशी षड्यन्त्रकारियों के बौद्धिक दास बनकर उनके उच्छिष्ट भोजी होकर धन के लालच, में कर रहे हैं। यह विचारणीय है कि यह सब आर्य (हिन्दू), वैदिक संस्कृति व इतिहास के विरुद्ध ही क्यों हो रहा है? अन्य किसी सभ्यता के विरुद्ध क्यों नहीं? जबकि ये अपराधी स्वयं भी प्रायः स्वयं को भारतीय अथवा हिन्दू ही कहते हैं। उधर अनेक राजनीतिक दल इस समय मूकदर्शक बने अपने राजनीतिक लाभ–हानि का गणित लगा रहे हैं। ऐसे ही स्वार्थी शासकों अथवा नेताओं के कारण ही देश की यह दुर्दशा सैकड़ों वर्षों से होती रही है।

मेरे प्यारे देशवासियो! भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति व गौरवमय इतिहास के उपासको! क्या आपके अन्तर्हृदय में जरा भी अपने महान् पूर्वजों का रक्त शेष रहा है अथवा आप स्वयं अंग्रेजी दासता से ग्रस्त मृतस्वाभिमान अभिशप्त जीवन जीते हुए केवल धन अर्जन का यन्त्र बन गये हो? यदि आपके हृदय में कुछ भी स्वाभिमान बचा है, आपका आत्मा यदि कुछ भी अंशों में जीवित है, तो उठो! अपने महान् पूर्वजों पर गर्व करना सीखो। उन महान् पूर्वजों को मात्र गुरुडम, अवतारवाद एवं मूर्तिपूजा के आडम्बर में दबाकर मत मार डालो। उठो! देखो, यह दुर्गति कौन व क्यों कर रहा है? अपने आस्थाओं के ग्रंथों व कथित गुरुओं के विचारों का भी वैज्ञानिकता व सत्य के प्रकाश में परीक्षण करने का प्रयास करो। इन पर आक्रमण करने वालों का डटकर विरोध करो। आज ही पद्मावती फिल्म के विरुद्ध राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, फिल्म सेंसर बोर्ड को भंसाली पर कठोर कार्यवाही हेतु पत्र लिखो। प्रत्येक जाग्रत देशभक्त आज से ही पत्र लेखन का अभियान चलाए। जो स्वयं को भारतीय नहीं मानता, वह मौन बैठा रहे। मैं ऐसे मूकदर्शक महानुभावों से राष्ट्रकवि दिनकर के शब्दों में कहना चाहूंगा–

"जो तटस्थ है समय लिखेगा उनका भी अपराध"

इसके साथ ही मैं महर्षि वेदव्यास के शब्दों में कहना चाहूंगा–

"धर्म एवं हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।"

आज एक वैदिक भारतीय आदर्श नारी पर आक्रमण हो रहा है, कल किसी और आदर्श को निशाना बनाया जायेगा और क्या मेरा देश यूं ही सोता रहेगा? नहीं यह उचित नहीं– अब मेरे भारत को जगना होगा।

अन्त में मैं यह और स्पष्ट कर दूं कि वेद, देवों, ऋषियों एवं सभी भारतीय महापुरुषों एवं आदर्श देवियों के इतिहास व विज्ञान का व्यंग्य करने वालों को शीघ्र ही हमारे वैदिक विज्ञान के द्वारा वह उत्तर मिलने वाला है, जिसका सामना करने का साहस किसी भी वेदविरोधी विदेशी मानसिकता वाले दास में नहीं होगा बल्कि उसका दासत्व सदा के लिए समाप्त होकर वह भी अपने भारत, वेद व ऋषियों पर गर्व करना सीख जायेगा। आओ! मेरे सच्चे देशभक्तो! आओ, आपका हम हार्दिक स्वागत करते हैं।